Annual Subscription Rs. 100/-

ओ३म्

27 th June 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

उत्तराखंड की प्राकृतिक आपदा से चारों तरफ तबाही ही तबाही

हज़ारों की मौत हज़ारों बेघर

राहत और बचाव कार्य के बावजूद हज़ारों फँसे

उदारता पूर्वक दान देकर प्रधानमंत्री / मुख्यमंत्री राहत कोष के माध्यम से पीड़ित लोगों की हर संभव मदद करें।

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : १२
दयानन्दाब्द : १८९
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०६९
नंदन नाम संवत् ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सम्पादक
विट्ठलराव आर्य

वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्सः 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष तथा हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा

श्री विश्वनाथजी नहीं रहे

हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा तथा धर्म की बलिवेदी पर शहीद होने वाले हुतात्मा महाशय राजपाल जी के सुपुत्र श्री विश्वनाथजी अर्थशास्त्र में एम.ए. थे। श्री विश्वनाथजी का दिनांक १६ जून को सायं ४ बजे निधन हो गया। वे ९३ वर्ष के थे। २७ जुलाई १९२० को लाहौर में जन्मे श्री विश्वनाथ जी अर्थशास्त्र में एम.ए. थे। श्री विश्वनाथजी आजीवन विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में निमग्न रहे। उनके निधन से आर्य समाज, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा प्रकाशन के क्षेत्र को गहरा झटका लगा है।

वे पिछले ६५ वर्षों से प्रकाशन के क्षेत्र से जुड़े रहे। श्री विश्नाथजी को किशोर अवस्था में ही प्रकाशन क्षेत्र में आना पड़ा। जब उनके पिता महाशय राज्यपाल जी की एक मतान्ध कट्टरवादी ने हत्या कर दी।

१९४७ में देश के विभाजन के पश्चात् विश्वनाथजी ने दिल्ली में पुनः 'राजपाल एण्ड सन्स' को स्थापित किया। थोड़े ही समय में यह हिन्दी के प्रायः सभी प्रसिद्ध साहित्यकारों का सर्वप्रिय प्रकाशन संस्थान बन गया। अग्रणी प्रकाशक होने के नाते अमेरिका ने उन्हें अमेरिकी प्रकाशन व्यवसाय को देखने, समझने के लिए आमंत्रित किया। तत्पश्चात अपने छोटे भाई श्री दीनानाथ के साथ मिलकर उन्होंने 'हिन्द पॉकिट बुक्स' की स्थापना की और अंग्रेज़ी साहित्य का प्रकाशन 'ओरिएन्ट पेपर बैक्स' के नाम से प्रारम्भ किया।

विश्वनाथ जी अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ और 'फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स' के अध्यक्ष रह चुके हैं। आपने इनेक भारतीय प्रकाशक मण्डलों का विभिन्न देशों में नेतृत्व किया।

विशवनाथजी प्रकाशन को एक रचनात्मक कला और व्यवसाय तथा लेखकों से अपने आत्मीय सम्भों को अपनी मूल्यवान उपलब्धि मानते हैं। स्वर्गीय बच्चनजी, दिनकर जी, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, रांगेय राघव, आचार्य चतुरसेन, मोहन राकेश सबके साथ उनके मधुरतम संबंध रहे। ऐसे ही मधुर संबंध उनके वर्तमान लेखकों से भी थे।

वर्तमान में विश्वनाथजी का अधिकांश समय शिक्षण क्षेत्र में व्यतीत हो रहा था। डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष होने के नाते भारत में फैले ७०० डीएवी शिक्षण-संस्थानों के नीति-निर्धारण और प्रबंधन में प्रतिदिन समय देते थे। इसके अतिरिक्त समाज सेवा में जुटे लाला दीवानचंन्द्र ट्रस्ट और राजपाल एजुकेशन ट्रस्ट के वे अध्यक्ष भी रहे। कविता लेखन से उनका संबंध पिछले मात्र तीन वर्षों से ही हुआ था। इस अवधि में उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी में सैंकड़ों कविताएँ लिखी हैं। 'अंतरा' उनकी हिन्दी कविताओं का प्रथम संग्रह है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेशजी ने समस्त आर्य जगत् की ओर से उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा कि श्री विश्नाथजी के निधन से आर्य साहित्य के प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाला जाज्वल्यमान नक्षत्र का अस्त हो गया है। उनके जैसे निःस्वार्थ, कर्मठ समाजसेवी विरले ही होते हैं। परम पिता परमात्मा उनके सद्गति प्रदान करें। पारिवारिक जनों को उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के प्रधान श्री विठ्ठलराव आर्य ने भी विश्वनाथजी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए उसे अपूर्णीय क्षति बताया है।

एक वाक्य क्या नहीं कर सकता

- खुशहालचन्द्र आर्य

मेरे प्यारे देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी व्यक्ति द्वारा कहा गया एक वाक्य इतिहास को बिगाड़ भी सकता है और इतिहास को सुधार भी सकता है। एक देशी कहावत है कि एक चना क्या भाड़ फोड़ सकता है। परंतु इतिहास इसके विपरीत है। वैसे तो इतिहास में अनेकों उदाहरण ऐसे मिलते हैं, पर मैं यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध उदाहरण ही प्रस्तुत करता हूँ।

१- माता सीता द्वारा कहा एक वाक्य - जब श्रीरामचंद्रजी को अपने पिता दशरथ द्वारा दिये गये रानी कैकई को तीन वचनों के आधार पर श्री राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। जब श्री राम शरयू नदी को पार करके एक भीषण जंगल में एक कुटिया बनाकर रह रहे थे, तब वहाँ एक विलक्षण घटना घटी। इस कुटिया के चारों तरफ राक्षसों का ही वास था। वहाँ राक्षसों के राजा रावण का ही प्रभुत्व था। सभी राक्षस रावण के अधीन थे। रावण जब सीता के स्वयंवर में सम्मिलित हुआ था और सीता ने श्री राम के गले में वरमाला डालकर दी थी, तभी से रावण ने सीता का हरण करने की इच्छा बना रखी थी। यहाँ उसके एक बहाना भी मिल गया कि रावण की बहन का स्वरूपनखा श्रीराम या लक्ष्मण से विवाह करना चाहती थी। जब इन दोनों ने उसके प्रस्ताव को ठुकराकर उसका अनादर किया, दूसरे शब्दों में उसकी नाक काट दी (किसी की बात न मानने का अर्थ ही नाक काटना होता है) तभी से स्वरूपनखा श्री राम से क्षुब्ध थी। और उसने अपने भाई रावण को अपनी निराशा की जानकारी दी साथ ही सीता का हरण करने की पूरी रूप-रेखा बता दी। रावण ने इस अवसर को अच्छा मानकर अपने आज्ञाकारी एवं रूप बदलने में माहिर मायावी राक्षस खरदूषण को बुलाया तथा उसे पूरी योजना की जानकारी देकर स्वर्ण हिरण का रूप धारण कर सीता के सामने से गुज़रने के लिए कहा। इस योजना के अनुसार खरदूषण स्वर्ण रंग का हिरण बनकर जैसे ही सीता के सामने से गुज़रा, वह सीता के मन को भा गया। उसने अपने पति श्रीराम से कहा वह हिरन हो सके, तो जीवित पकड़कर लाएं, ता कि बच्चे की तरह उसका पालन-पोषण कर मन बहलाव कर सकें, और संभव नहीं हुआ, तो उसे मारकर लाएं, ता कि उसकी खाल मृगछाला के रूप में काम में लायी जा सके। श्री राम ने सबसे बड़ी भूल यह की कि सीता के कहने पर बिना सोच-विचारे ही उसने धनुष बाण उठाया और हिरण के पीछे दौड़ना शुरू किया। इस मायावी हिरण ने कुछ दूर जाकर इस तरह रोना शुरू कर दिया कि हे लक्ष्मण, मुझे बचाओ। सीता के कान में जब यह आवाज़ पड़ी, तो वह भयभीत हो उठी और उसने अपने देवर लक्ष्मण से कहने लगी कि तुम्हारे भाई पर कोई आपत्ति आ गई है। जाओ, तुम उन्हे आपत्ति से निकालो। लक्ष्मण ने अपनी भाभी को बहुत समझाया कि मेरे भैया श्रीराम ऐसे कमज़ोर नहीं हैं, जो किसी आपत्ति में पड़ सकें। यह राक्षसों का कोई मायावी जाल है। आप चिंता मत करो, मेरे भैया कुछ ही देर में ज़रूर आ जाएंगे। पर उस समय सीता माता ने जो वचन कहे, उन्होंने पूरे इतिहास को बदलकर रख दिया। पर उस समय सीता माता ने जो वचन कहे, उन्होंने पूरा इतिहास बदलकर रख दिया। उसने लक्ष्मण से कहा कि तेरे मन में पाप आ गया है। तू यह सोचता है कि भाई मर जावे, तो सीता तुम्हारी हो जाएगी, लेकिन ऐसा कदापि नहीं होगा। लक्ष्मण जैसे महान तपस्वी के लिए यह शब्द असह्य थे। और वह तुरंत अपने भाई की खोज में निकल पड़ा। आगे जो घटना घटी, वह सर्व विदित है। सीता माता के इन्हीं कटु शब्दों ने रामायण की रचना कर डाली।

२ माता द्रौपदी द्वारा करा गया कुवाच्य - यह दूसरा दृष्टान्त हमें महाभारत में मिलता है। जब युधिष्ठिर ने जुआ खेलने से पहले अपना अलग राज्य हस्तीनापुर से दूर इन्द्रप्रस्थ में पाँचों भाइयों ने मिलकर बना लिया. तब युधिष्ठिर ने वहाँ एक बहुत ही सुंदर महल बनवाया। इस महल की खूबी यह थी कि जहाँ पानी दिखता था, वहाँ ज़मीन होती थी और जहाँ ज़मीन दिखती थी, और जहाँ दरवाजा दिखता था वहाँ दीवार होती थी और जहाँ दीवार दिखती थी, वहाँ दरवाजा होता था। इस महल को देखने के लिए देश-विदेश के अधिकतर राजा-महाराजा आये थे। उनमें युधिष्ठिर का चचेरा भाई दुर्योधन भी आया था। दूर्योधन जब महल देखने लगा, तब उसे जहाँ पानी दिखाई देता था, वहाँ वह धोती उठा लेता था, और जहाँ ज़मीन दिखाई देती थी, वहाँ धोती को नीचे कर देता था और धोती भीग जाती थी। जब उसे कहीं दरवाजा दिखता था, तब वह चलने जाता था और उसका माथा दीवार से टकराता था। इस प्रकार वह अपने आप में शर्मिंदा हो रहा था। तभी पांडवों की धर्म पत्नी ऊपर बैठी दुर्योधन को देख रही थी। द्रौपदी ने व्यंग्य कसते हुए कहा कि अन्धे को अन्धा ही पैदा होता है। यह सुनते ही दुर्योधन आग-बबूला हो गया। और उसने इस बात का बदला लेने की मन में ठान ली। वह तुरन्त वहाँ से आ गया और सारी बात अपने मामा शकुनी को बता दी और किसी भी प्रकार इस बात का बदला लेने की इच्छा जताई। आगे जो कुछ भी हुआ, वह सर्वविदित है। महाभारत के युद्ध का होना द्रौपदी के व्यंग्यात्मक कथन का ही दुष्परिणाम था।

३- चाणक्य द्वारा ली गई प्रतिज्ञा - मध्यकाल में मगध के राजा महानंद ने चाणक्य का अपमान किया था। तब महान नीतिवान् चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं मगध राज्य का विनाश करके ही अपनी चोटी को बांधूंगा। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए चाणक्य ने एक होनहार बालक को चुना, जो अपने साथी बच्चों के साथ खेल रहा था, और उसी राजा की दासी का लड़का था।

आओ जानें - मैं कौन हूँ ? किस लिए आया हूँ? क्या लेकर जाऊँगा ?

- सीताराम गुप्ता

स्वयं को स्वयं करे प्रति सजग करना ही आध्यात्मिकता है, लेकिन स्वयं को स्वयं के प्रति सजग कैसे करें इस पर विचार करने से पूर्व यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि अध्यात्म क्या है? मोटे तौर पर अध्यात्म से तात्पर्य है अपनी आत्मा अथवा चेतना के स्रोत से एकाकार होना। मनुष्य मात्र भौतिक शरीर नहीं है। इस शरीर को कई भागों अथवा कई परतों में बाँटा गया है।

शरीर को प्रमुख रूप से तीन भागों, परतों अथवा कोषों में विभाजित किया गया है। भौतिक शरीर, मानसिक शरीर तथा आध्यात्मिक शरीर। इन तीनों शरीरों को क्रमशः स्थूल शरीर, कारण शरीर तथा सूक्ष्म शरीर भी कहा गया है। स्थूल शरीर जो दृष्टिगोचर होता है, सूक्ष्म शरीर अर्थात चेतना, जो अदृश्य है तथा कारण शरीर अर्थात् मन। भौतिक शरीर हमारा बाहरी आवरण है, तो आत्मा अथवा चेतना अंतरतम बिंदु और मन के नियंत्रण तथा इसकी अभ्यंतर गति द्वारा चेतना से एकाकार होना ही सजगता है और यह सजगता आध्यात्मिकता है। यही वास्तविक ज्ञान है। बाहरी चीजों की जानकारी के बजाए स्वयं का सही ज्ञान होना ही सजगता अथवा आध्यात्मिकता है।

सजगता अथवा आध्यात्मिकता के विकास के लिए आत्मा अथवा चेतना या स्वयं के मूल स्वरूप को समझना बहुत अनिवार्य है। आत्मा अथवा चेतना या स्वयं के मूल स्वरूप को समझना बहुत अनिवार्य है। आत्मा अथवा चेतना या स्वयं के मूल स्वरूप को कैसे समझें? इस शरीर द्वारा हाथ-पैर, आँख, नाक, कान, जिह्वा अथवा त्वचा आदि ज्ञानेंद्रियों द्वारा अथवा किसी प्रकार से? जहाँ तक ज्ञानेंद्रियों का प्रश्न है, वे भी स्वयं काम नहीं कर सकतीं। जब तक उनके पीछे कोई प्रेरणा न हों, कोई स्वार्थ न हो, वे कैसे कार्य कर सकती हैं? हर इंद्रिय के पीछे एक मन है, जो ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से कार्य करता है।

जब तक मनुष्य न चाहें आँखें होते हुए भी वह देख नहीं पाता। कान होते हुए भी सुन नहीं पाता। मनुष्य की चाह या इच्छा ही सब कुछ है। और इच्छा का उद्‌गम या मूल है 'मन'। 'मन' ही ज्ञानेंद्रियों की वृत्तियों को जगाता है, उत्तेजित करता है या तटस्थ करता है। इस मन की चंचलता को नियंत्रित करना ही वास्तविक सजगता है। लेकिन मन पर नियंत्रण कैसे करें? मन द्वारा ही मन का नियंत्रण संभव है। मन को उचित दिशा-निर्देश मन द्वारा ही दिया जा सकता है? अब इस मन को खोजना है, वह कहाँ है? वस्तुतः जिस मैं की बात है या आत्मा की बात है, उस तक पहुँचना मन द्वारा मन के स्रोत तक की यात्रा है। महर्षि रमण ने भी मन द्वारा मन के स्रोत की यात्रा को ही आध्यात्मिक यात्रा कहा है। जहाँ हमें पहुँचना है, वह मन का उद्‌गम है। वहीं से मन का प्रारम्भ है।

बाह्य जगत् में चेतन मन है, तो आंतरिक जगत् में अचेतन या अवचेतन मन है। न जाने कितनी परतें है मन की। मन द्वारा, चेतन मन द्वारा अचेतन के अंतिम छोर की यात्रा ही आत्मा की यात्रा है। जैसे-जैसे मन निर्विकार हो जाता है, वैसे-वैसे चेतना का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट होने लगता है। यही 'मैं' की खोज है। जो खोज लेता है, इसकी व्याख्या नहीं कर पाता और न ही उसे इसकी व्याख्या की ज़रूरत रहती है और जो खोज नहीं पाता और न ही खोजने का प्रयास करता है, वह व्याख्या करने का प्रयास करता रहता है। विकार या विचार रहित होकर ही मन आत्मस्थ होता है। यही मनुष्य की आंतरिक यात्रा है। मन को इच्छा या विकार रहित करने का उपाय है ध्यान या मेडिटेशन की अवस्था में मन में विचारों अथवा संकल्प-विकल्पों का प्रवाह कम होकर अंततः रुक जाता है। यहाँ विचार इतने क्षीण हो जाते हैं कि किसी भी अनुपयोगी विचार को उखाड़ फेंकना तथा उपयोगी विचार का रोपण सरल हो जाता है। ध्यान के माध्यम से ही मन पर पूर्ण नियंत्रण संभव है। यहाँ सचेत होकर ही व्यक्ति सही मार्ग का चुनाव कर सकता है। यही सजगता की चरमावस्था है ।

हम किसी भी हालत में मन की उपेक्षा नहीं कर सकते। मामला चाहे भौतिक उन्नति का हो अथवा आध्यात्मिक अभ्युदय का। जब मन की बाह्य गति को विराम मिलेगा, तो निश्चित रूप से मन की द्वंद्वात्मक स्थिति से मुक्ति मिलेगी। ऐसी अवस्था में मन संकल्प-विकल्प रहित होगा ही, विचार शून्यता की ओर पदार्पण करेगा और अपने मूल स्रोत से एकाकार हो सकेगा। यही मन का वास्तविक रूपांतरण है। मन पर नियंत्रण के लिए अपेक्षित है साधना और साधना के लिए अनिवार्य है अपेक्षित परिवेश। इसके लिए ज़रूरी नहीं कि घर-बार अथवा संसार का त्याग ही किया जाए, संसार में रहते हुए हम अपेक्षित साधना अथवा मन पर उचित नियंत्रण और इसके संस्कार द्वारा अपनी चेतना से एकाकार हो सकते हैं। इस संसार में रहते हुए यदि मनुष्य ठान ले कि मुझे अध्यात्म पक्ष पर अग्रसर होना ही है, तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी। सबसे अधिक महत्वपूर्ण तो मन की निर्मलता और निष्कपटता है। आध्यात्मिकता के विकास में बाधक घर-संसार नहीं, अपितु बाधक है मन में व्याप्त घातक नकारात्मक वृत्तियाँ। राग-द्वेष, घृणा आदि नकारात्मक भाव, जो घर को भी घर नहीं रहने देते और फिर यदि इन भावों के साथ संसार का त्याग भी कर दिया, तो वह भी किस काम का। अत्याधिक राग से अनासक्ति अथवा मुक्ति ही वास्तविक वैराग्य है। हमारे अनेक महान् साधु-संत, कवि, विचारक, चिंतक जो सही अर्थों में आध्यात्मिक व्यक्ति भी हुए हैं, सद्‌गृहस्थ ही थे। संत कवि तिरुवल्लुवर और कबीर जुलाहे थे, रविदास चमड़े से जूते बनाते थे, रामदेव दर्जी का काम करते थे। निसर्गदत्त महाराज परचून की दुकान चलाते थे। विपश्यना के आचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का हमेशा अपनी सहधर्मिणी के साथ ही दिखलाई पड़ते हैं।

सांसारिक मुश्किलों से घबराकर पलायन करने वाला व्यक्ति ऊपरी तौर पर चाहे कितना ही परिवर्तन कर ले, भगवा वस्त्र धारण कर ले, अथवा मठ में रहने लग जाए, सहजता, सरलता तथा मन की निर्मलता व निष्कपटता के अभाव में अध्यात्म पथ का यात्री नहीं हो सकता। कर्म भी एक साधना है और कर्मयोग का साधक निष्काम कर्म द्वारा अध्यात्म मार्ग का अनुसरण ही करता है। व्यवसाय में ईमानदारी, सेवा में कर्तव्यनिष्ठा भी आध्यात्मिकता ही तो है। राग-द्वेष, लाभ-हानि, सुख-दुःख आदि परस्पर विरोधी भावों से ऊपर

उठ जाना ही सच्ची आध्यात्मिकता है।

कुछ लोगों का मानना है कि धर्म की जानकारी अथवा वाह्य ज्ञान ही वास्तविक आध्यात्मिकता है लेकिन बड़े-बड़े ग्रंथों का पारायण और उनके दृष्टांत याद कर लेना ही आध्यात्मिकता नहीं। कबीर अंगूठा छाप थे, पर आत्मज्ञान में पगे हुए। किसी प्रकार की सिद्धी अथवा चमत्कार में कभी आध्यात्मिकता नहीं है। आध्यात्मिकता है, तो जीवन की सहजता और सरलता में। अनेक प्रकार के अनुष्ठान बाह्याचार, मंत्र लेना, दीक्षा लेना, गुरु बनाना, इन सबका आध्यात्मिकता से कोई लेना-देना नहीं। ये सब साधन तो हो सकते हैं, साध्य नहीं। नाम के अंत में आनन्द जोड़ने से भी आध्यात्मिकता का अनुभव या आनंदानुभूति संभव नहीं। नाम परिवर्तन महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन नाम के अनुरूप भाव परिवर्तन के द्वारा ही आध्यात्मिकता का उदय संभव है।

भौतिक शरीर को कष्ट देने से भी अध्यात्म पथ प्रशस्त नहीं होता। बुद्ध ने घोर तपस्या की, लेकिन बात नहीं बनी। जब उन्हें ज्ञान हुआ, तो कहा कि बीच का रास्ता ही ठीक है। साधना शरीर की नहीं, मन की होनी चाहिए। मन को रिक्त होना चाहिए। इस संसार को देखो और देखकर आगे बढ़ जाओ। संसार में रहो, लेकिन इस तरह, जैसे नाँव नदी के जल में तो रहती है, पर जल नाँव के अंदर नहीं आने पाता। हम संसार में रहें, पर घोर सांसारिकता हम में व्याप्त न होने पाए। इसके लिए अनिवार्य है मन की उच्छृंखल वृत्ति को नियंत्रित कर उसे उचित दिशा देना। गलत कंडीशनिंग को तोड़कर सही कंडीशनिंग करना और इसके लिए घर-बार और संसार छोड़ने की कतई जरूरत नहीं।

एक बार कुछ योगियों ने गुरु नानक देवजी से पूछा कि आप न तो माथे पर तिलक लगाते हो और न गले में माला ही धारण करते हो, फिर आप कैसे योगी अथवा आध्यात्मिक पुरुष हो? गुरु नानक देवजी ने कहा है कि अंजन माहि निरंजनि रहीऔ, जोग जगति इवै पाइऔ। अर्थात् योग तो परमात्मा को मन में बिठा लेने से होता है, न कि बाहरी आडम्बरों से। रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि बिहारी यद्यपि श्रृंगार रस के कवि हैं, लेकिन अध्यात्म के बारे में वे अत्यंत स्पष्ट विचार रखते हैं। उनका एक दोहा देखिए-

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु,
मन काँचे नाचै वृथा, साँचे राचै रामु।

किसी पंथ विशेष में दीक्षित होना, विधिवत् संन्यास ग्रहण करना भी आध्यात्मिकता नहीं, क्योंकि वहाँ भी व्यक्ति या साधक एक निश्चित विचारधारा में बंध जाता है और किसी भी प्रकार का वैचारिक बंधन आध्यात्मिकता की अनुभूति में बाधक ही होता है। जो व्यक्ति बिना किसी पंथ विशेष में दीक्षा लिये बिना ही मुक्त हो सके, वही अध्यात्म पथ का सच्चा यात्री और जिज्ञासु है। मनुष्य को बाँधने वाले होते हैं उसकेमनोभाव। घर-बार और संसार कहाँ बाँधते हैं। घर छोड़ने पर भी रहना तो संसार में ही पड़ेगा। संसार से नहीं, घोर सांसारिकता अथवा भौतिकता से मुक्त होना ही सच्ची आध्यात्मिकता है और इसके लिए मन द्वारा मन के नियंत्रण की कला में निष्णात होने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।

(पृष्ठ ३ का शेष..)

उसकी योग्यता को देखकर उसे अपने पास रखकर उसे शस्त्र विद्या में निपुण किया और उसी के द्वारा महानंद को पराजित करवाया और मगध का राजा चंद्रगुप्त को बनाया। यह था चाणक्य के अपमान का बदला, जिसके कारण मगध का महान सम्राट मिट्टी में मिल गया।

४- गुरुवार स्वामी विरजानन्द द्वारा पूछा गया प्रश्न - सबसे अधिक यदि किसी वाक्य का प्रभाव पड़ा है, तथा संसार को लाभ पहुँचा है, तो गुरुवर विरजानन्द द्वारा ब्र. दयानंदजी से पूछा गया प्रश्न 'तुम कौन हो'। जब महर्षि दयानन्द किसी सच्चे गुरु की खोज में घूम रहे थे, तब स्वामी पूर्णानन्द, जो स्वामी विरजानन्दजी के गुरु थे, उनको बतलाने से ब्र. दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया, मथुरा में सन १८६० में पहुँचे, तब कुटिया बन्द थी। ब्र. दयानन्द ने आवाज़ लगाई, कृपया दरवाज़ा खोलें। अन्दर से आवाज़ आयी कि आप कैन हैं? तब ब्र. दयानन्द ने कहा - मैं वही जानने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ। बस, यह उत्तर क्या था, मानो विश्व कल्याण का संदेशवाहक था।

विरजानन्दजी ने जब यह उत्तर सुना, तो वे गद्‌गद् हो गये और समझ गये कि आज मेरे दरवाजे पर वह व्यक्ति खड़ा है, जिसकी मुझे वर्षों से प्रतीक्षा थी। विरजानन्दजी ने दरवाज़ा खोला, दयानन्दजी ने गुरूजी के चरण छूकर नमस्ते किया और कहा कि मैं ब्र. दयानन्द हूँ और आपसे विद्या सीखने आया हूँ। गुरुजी का पहला प्रश्न था कि तुमने अब तक क्या-क्या पढ़ा है? दयानंद ने उन सभी पुस्तकों के नाम बता दिये, जो उन्होंने पढ़े थे। तब गुरुजी ने कहा, दयानन्द ये सब अनार्य ग्रंथ हैं। पहले तुम इन्हें यमुना में बहाकर आओ। फिर मैं तुम्हें आर्य ग्रंथ पढ़ाऊंगा। दयानंद एक पक्के गुरु भक्त थे। उसने वैसा ही किया और गुरु विरजानंद के पास पढ़ने लगे। स्वामी विरजानंदजी का स्वभाव बड़ा क्रोधी और हठी था। उनके हर किस्म से प्रसन्न रखते हुए दयानंद ने लगभग तीन साल में पूरी विद्या पढ़ ली।

गुरुजी को लौंग खाने का बड़ा चाव था। विद्या प्राप्ति के बाद दयानंद कुछ लौंग लेकर गुरुजी के पास गये। और विनम्र निवेदन करते हुए गुरुदक्षिणा के रूप में गुरुजी को लौंग देने की बात कही। तब गुरुजी की आँखों में आंसू भर आये। उन्होंने कहा, दयानंद मैंने तुम्हें गुरुदक्षिणा के रूप में लौंग लेने के लिए नहीं पढ़ाया। तब दयानंद ने कहा, गुरुवर - आप जो आज्ञा दें, आपका शिष्य वह आपको देने के लिए तैयार है। तब गुरुजी ने रोते हुए कहा कि मैं तो दयानंद तेरा जीवन लेना चाहता हूँ। आगे और कहा, कि विश्व में अज्ञान अन्धविश्वास और पाखंड का बोलबाला है। गरीब, असाह्य की कोई नहीं सुनता। सारी जनता अन्धकार में भटक रही है। तुझे वेद- ज्ञान द्वारा इस अंन्धकार को मिटाना है और असह्य लोगों का सहारा बनना है। स्वामी दयानन्द तथास्तु कहकर गुरुजी का आशीर्वाद लेकर कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। यह सर्वविदित है कि स्वामी दयानंद ने कितने दुःखों व कष्टों को जीवनभर सहन करते हुए अपने उद्देश्य को प्राप्त किया और अपने गुरूजी को दिये गये वचनों का पालन किया। यह सब 'आप कौन है' वाक्य का ही सुपरिणाम था। ईश्वर महर्षि दयानन्द की जलाई हुई अग्नि को और अधिक प्रज्वलित करें। यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

राजेंद्र जिज्ञासु को खुली चुनौती

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

मित्रों, संस्कृत में एक तांत्रिक युक्ति है - 'परमप्रतिषिद्धमनुमतं भवति' अर्थात् दूसरे का मत जिसका खण्डण किया गया हो, वह मत स्वीकृत होता है। इसी दृष्टि से इन्होंने जो मेरे विषय में अपना मत परोपकारी के अप्रैल (द्वितीय) २०१३ के अंक में प्रकट किया है, के खण्डनार्थ यह लेख लिखा है। संसार में दो वृत्तियों का प्राधान्य है। एक- मधुकरी वृत्ति, दूसरी शर्करा वृत्ति। मधुकरी वृत्ति तो 'सर्वतः सारमादघात्पुष्पेम्य इव षट्पदः' है। जिस प्रकार मधुकर पुष्पों से अपने स्वाथ४साधन हेतु सार ग्रहण करता है, परन्तु पुष्प का कोई नुकसान नहीं करता। द्वितीय वृत्ति में शर्करा अपने निर्माण के लिए अपने वंश का समूल नाश कर देती है। स्वार्थ साधन तत्पर अपने को उच्चादर्श वाला व्यक्ति सिद्ध करने के लिए राजेन्द्र जिज्ञासु किसी को भी मिटा देने के लिए कटिबद्ध है। शर्करा वृत्ति प्रधान बनाकर जो कुछ भी करना पड़े, कुछ भी असंभव कहना वा लिखना पड़े, सब कुछ करने को तैयार है। जिनसे इनका ज़रा सा भी किसी भी विषय में वैषम्य हो जावे, बस यह व्यक्ति इनका जानी दुश्मन बन जाता है।

जैसा कि यह सर्व विदित है कि आजकल ये परोपकारिणी सभा एवं तत्स्थ विद्वान महानुभावों के सभी अपराधों तथा कुकृत्यों को परोक्ष कर जिस प्रकार भाट सब दोषों को गुणों में बदलकर प्रशंसा करता है, उसी प्रकार यह भी प्रशंसक है। परोपकारिणी सभा ने अपने विद्वानों के द्वारा सब कुछ परिवर्तन कर सत्यार्थ प्रकाश का कचरा बना डाला। जिस-जिसने परोपकारिणी के इस कुकृत्य की निन्दा की, वही राजेन्द्र जिज्ञासु का सर्वथा निन्दनीय पात्र बन गया। उसमें श्री पूज्य आचार्य विशुद्धानंद, युधिष्ठिर मीमांसक, तथा पूज्य रामनाथ जी वेदालंकार प्रभृति विद्वानों के साथ मैं भी इनके कुवाच्य वर्णण .... भयंकर गालियों का भाजन बना।

सम्प्रति तो परोपकारी पत्र में पूज्य आचार्य विशुद्धानन्दजी के कुमुदजनों के मन कुमुदों, को मुद से मुदित बनाने वाले पावन चरित्र को कलंकित करने का भरसक प्रयास किया। उससे अगले अंक में इनकी लेखनी ने मुझे धार पर धर लिया। पर इनको यह पता नहीं कि मेरी लेखनी इस महानुभाव को सुधारने में समर्थ है। यह नहीं जानते कि खलत्व... दुष्टता की परिभाषा क्या है। 'गुणेन केनापि जनेऽनवद्ये,दोषान्तरोक्तिः खलुतत्खलत्वम्' अर्थात् मूर्खता अविद्या से किसी गुण में दोषान्तर कहना ही दुष्टता है। इसकी दुष्टता को सुधारना हमें आता है।

जिज्ञासु महानुभाव। झूठा दोष दिखाकर लिखना ऐसे ही है, जैसे कि जंगली मनुष्य गजमुक्ताओं को हाथ में लेकर उनके छोड़के घुंघुची का हार बनाकर गले में पहनकर फूला फूले फिरे। शायद विद्याविहीन व्यक्ति को यह स्लोक स्मरण कैसे याद आ सकता है।

न वेत्ति यो यस्य गुण प्रकर्षं स तस्य निन्दा सततं करोति।

यथा किरातः करिकुम्भजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति गुञ्जाः॥

आपने मुझ पर जो दोष मढे हैं, उनमें सर्व प्रथम यह है कि मैंने किसी प्रधान को इलाहाबाद में कमरे में बन्द कर वा पीटकर मुँह माँगी दक्षिणा ली। एतदर्थ आपको चैलेन्ज है कि इसे आप सिद्ध कर दें। जबकि इसके प्रत्यक्षदर्शी आपके परम मित्र,जिन्हें आप स्वामी सत्य प्रकाशजी की याद में नहीं छोड़ना चाहते हैं। वे विद्वान महानुभाव विद्यमान हैं। इससे बड़ा झूट और क्या हो सकता है कि मैंने यह घटना आपको सेवयं सुनाई या बताई। जिससे आपको अपनी पुष्टी में अन्य किसी साक्षी की आवश्यकता ही ना पड़े। फिर भी ऐसी घटनाएं एक लम्बे काल तक अपने स्मृति चिह्न छोड़ देती हैं। इलाहाबाद में किसी को तो याद होगी, सब तो नहीं स्वर्गवासी हो गए। मैंने एक प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्यक्षदर्शी के सामने रख दिया है, जो कि आप द्वारा कहे गये मिथ्या कथन का मूलोच्छेद करने को तैयार है। रही बात आपने कवी दक्षिणा नहीं माँगी। आप इस योग्य ही नहीं कि दक्षिणा माँग सके। उसमें दो कारण हैं।

१- एक तो आप डी.ए.वी. की गुलामी करने वाले हैं, दूसरा गुलाम कभी उपदेशक नहीं बन सकता। यह तो वर्तमान आर्य समाज की पद्धति का दोष है कि आपको उपदेशकवत् स्वीकार किया जाता रहा है। दोहरा लाभ एक कॉलेज से वेतन तथा आर्य समाज से दक्षिणा प्राप्त करके शर्म नहीं आयी। अपितु कहना चाहिए था कि मैं एक वेतन भोगी गुलाम हूँ, उपदेशक नहीं हूँ, मुझे दक्षिणा नहीं चाहिए, लेकिन तुम जैसे बेशर्मों की लोभ वा लाभ की इच्छा से इतना सामर्थ्य कहाँ है, जो ऐसा कह पाए।

दूसरा मनगढन्त आरोप यह है कि मैंने अग्निवेश को दीक्षानंदजी के आप द्वारा उद्धृत प्रसंग में गालियाँ दी। अग्निवेशजी अभी जीवित हैं। उनके आपके सामने बुलाये देता हूँ कि मैंने उनको कब कैसी गालियाँ दी थी? जिज्ञासुजी । यह कहकर दामन नहीं छुड़ा सकते कि मैंने (श्रोत्रिय) ने आपको कहा है? या तो सिद्ध करना पड़ेगा या इसके विपरीत माफी माँगनी पड़ेगी। इतनी छूट नहीं दी जा सकती कि आप मेरे नाम से झूठ बोल सकें। फिर आपकी यह कहने की यह भी हिम्मत कि मैं उनकी छत्र-छाया में पलता हूँ। यदि मैं उनकी छत्र-छाया में पलता होता, तो तुम्हारी तरह झूठा और गुलाम होता। मैं ईश्वर की छत्र-छाया में रहता हूँ।

तीसरा आरोप, जो व्यंग्य प्रधान है, जिसका सीधा सम्बध मेरे व्यक्तिगत जीवन से है कि

१) मैं अच्छा पिता हूँ- अच्छा पुत्र हूँ, वे आचरणवान हैं। ऊँचा आचार रखते हैं। उनको नमन करने में ही सबका भला है।

जिज्ञासु- यह आपको पता है कि मैं अच्छा पिता नहीं हूँ, चलिए मैं आपसे ही पूछता हूँ कि आप तो एक अच्छे पिता हैं। क्या आप लिखित अनुमति देंगे कि मैं उन

Date : 20-5-2013

IMPORTANT NOTICE TO OFFICE BEARERS OF ARYA SAMAJAS

ELECTIONS TO ARYA PRATINIDHI SABHA A.P.

ELECTION NOTIFICATION

Elections to Arya Pratinidhi Sabha A.P. will be held on 10th & 11th of August 2013

Last date to receive delegate application forms from Arya Samajas: Dt.30-6-2013

The delegates whose forms have been on or before 30th June 2013 before the meeting and accepted in the managing committee to be held on 30-6-2013 will only be intimated to participate in General body meeting and elections to be held on 10th & 11th August 2013.Delegate application forms received after 30-6-2013 will be put before the General body meeting on 10th August 2013 for acceptance and approval and only such persons whose delegate application forms shall have been approved by General body will be allowed to participate in the election. Hence the office bearers of all the Arya Samajas are requested to submit their delegate application forms on or beofore 30th June 2013 along with necessary fee.Format of delegate form is given in this issue and in earlier issues. Send the below given delegate formats duly filluped putting signatures and stamp of Samaj.

1. Detail information of Arya Samaj 2. Oath of Arya Samaj 3) Letter regarding the elections of representatives by its General body along with delegate form. 4) Oath by representative delegates of Arya Samaj 5) Affidavit to be given by office bearers of Arya Samaj. 6) List of members of Arya Samaj 7) Income - Expenditure information 8) Required fee i.e. Dashamsha and other fee.
(Those who are paying Rs. 250/- per anum as membership fee will only be accepted as members, less payers are not accepted)

Fee details: 1) Dashamsha i.e. 10% on membership fee received for total 3 years. 2) Pravesh shulk Rs. 25/- only on each and every delegate 3)Aandolan Shulk Rs. 300/- only on behalf of Arya Samaj. 4) Representative delegate fee Rs. 25/- only on each and every delegate. 5) 2% contribution per anum on definite income earned by Samaj by its properties and from other sources if any or Rs. 5000/- only on its total definite income of three years received from rents and from other sources i.e. once in three years at thetime of Sabha's election, whichever is less. Arya Samajas following the due formalities can send their elected representatives as below .
1)Only one delegate on its first 9 members next on each 20 members (no fraction) one delegate i.e. 2) Two delegates on 29 members 3) Three delegates on 49 members 4) Four delegates on 69 members 5) Five delegates on 89 memebers. No Samaj can send more than 5 delegates.

President **Secretary**

Arya pratinidhi Sabha Andhra Pradesh

Sultan bazar, Hyderabad. Reg. No. 6/52 Fasli (Old), 1342/84 (new)

ओ३म्

आर्य समाज

मंडल ______________________________

जिला ______________________________ का

प्रतिनिधि आवेदन-पत्र

१) कुल सभासदों की संख्या ....

२) कुल प्रतिनिधियों की संख्या ....

३) प्रतिनिधियों पर देय दशांश रु.................

४) प्रवेश शुल्क रु.................

५) आंदोलन शुल्क रु ३००-००

६) प्रतिनिधि शुल्क रु ....

७) समाज की सम्पत्ति से देय शुल्क रु.................

८) कुल देय शुल्क रु.................

प्रधान / मंत्री / कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश

कार्यालय अधिकारी

प्रधान / मंत्री / कोषाध्यक्ष
आर्य समाज ....

ఆర్య సమాజ్ ....వివరాలు

1. ఆర్య సమాజం పేరు, చిరునామా ....

ఫోన్ నం. ....

2. సభాసదుల సంఖ్య ....

7. సమాజ కార్యక్రమముల వివరణ ....

8. సమాజ ఎన్నికలు నిర్వహించిన తేది : ....

మంత్రి ప్రధాన్

ఆర్యసమాజము ....

<u>సమాజం యొక్క ప్రతిజ్ఞలు</u>

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్ యొక్క నియమొపనియమాల (జిగిలిజబిగీరి) సంఖ్య 10, 11, 12, 13, 14, 16, 46, 47, 48, 56, 57, 58 మరియు ప్రత్యేకంగా ఉపనియము సఖ్య (2) లను మరియు అన్ని నియమాలను

1. మా సమాజము అంగికరిస్తునట్టు ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నది. ప్రతినిధి సభ అజ్ఞలకు - ఆదేశాలకు విరుద్ధముగా ఏ పని చేయదని హామి ఇస్తుంది. సభకు ఇవ్వవలసిన రుసుము కూడ విధిగా చెల్లించెదము.
2. సభ నియమొప నియమాలకు విరుద్ధముగా పని చేసినపుడు సమాజ లెక్కకు సరిగా ఉంచనపుడు మరియు సభకు చూపించనపుడు, ఈ సమాజ కార్యవర్గమును రద్దుచేసి తాత్కాలిక తదర్థ సమితి సభ ఏర్పాటు చేయవచ్చును. లేదా ఆర్య సమాజమును చరాచర అస్థులతో సహా సభ తన స్వాధిన పరుచుకోవచ్చును. సభ ద్వారా తీసుకోబడె ఈ చర్య చట్టపరంగా కూడ సమ్మతమైనదని మేము స్వీకరించుచున్నాము.
3. సభ నియమానుసారము సమాజము యొక్క చరాచర అస్తులు యొక్క యాజమాన్యం సభదే ఉండును. వివాదంలో కూడ సభ నిర్ణయమె అంతిమంగా స్వీకరించుచున్నాము.
4. ఈ పత్రములో వివరించబడిన అంశాలు సత్యమైనవని మేము ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నాము.

ప్రధాన్ సంతకం **కోశాధ్యక్షులు** సంతకం మంత్రి సంతకం

ఆర్య సమాజము..............................

శ్రీమాన్ మంత్రిజి,
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్ర ప్రదేశ్
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్

తేది : ....

నమస్తే ,

ఆర్యా !

ఆర్య సమాజము .... యొక్క సర్వసభ్య సమావేశం తేది................................ నాడు నిర్వహించబడినది. నిర్వహించిన సర్వసభ్య సమావేశంలో, మా ఆర్య సమాజము నుండి సభకు ప్రతినిధులగా క్రింది వారు ఎన్నుకోబడినారు.

1. శ్రీ ....

2. శ్రీ ....

3. శ్రీ ....

4. శ్రీ ....

5. శ్రీ ....

వీరి వయస్సు 25 సంవత్సరాలకంటె తక్కువగా లేదు. నియమానుసారము ఎన్నుకోబడిన వీరి ప్రతినిధిత్వమును స్వీకరించగలరని మనవి.

ప్రధాన్ మంత్రి

ఆర్య సమాజము ....

ప్రతినిధుల ప్రతిజ్ఞ పత్రము

ఆర్య సమాజ నియమాలను అనుసరించి, ప్రత్యేకంగా ఉపనియమము 4 (ఘ) అనుసారము సదాచార నియమములను మరియు భక్ష్యా-భక్ష్య నియమాలను విధిగా పాటిస్తానని, ఆర్య ప్రతినిధి సభ అనుశాసనంలో ఉంటానని, సభ నీతి నియమాలను పాటిస్తానని హృదయ పూర్తికంగా ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నాను, నాలో దోషము ఉన్నట్లు ప్రమాణ పూర్వకంగా ఋజువు చేసినపుడు నా ప్రతినిధిత్వమును రద్దు చేయగలరు.

పేరు **ప్రతినిధి సంతకము**

1. శ్రీ ....

2. శ్రీ ....

3. శ్రీ ....

4. శ్రీ ....

5. శ్రీ ....

ప్రధాన్ మంత్రి

ఆర్య సమాజము ....

ఆర్య సమాజము.. నుండి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్ర ప్రదేశ్, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ కు

ఎన్నుకోబడిన ప్రతినిధుల అభ్యర్థన పత్రము

తేది : ....

దయానందాబ్ధ:.189

ఆర్య సమాజం పేరు : ....

సభాసదుల సంఖ్య : ....

ప్రతినిధి పేరు : ....

తండ్రి పేరు : ....

చిరునామ : ....

....

....

....

వృత్తి .... ఫోన్ నం. ....

ప్రతినిధి సంతకం

ఆర్య సమాజము

....

Note : ప్రతి ఒక్కరికి విడి-విడిగా ప్రతినిధి పత్రమును విధిగా నింపి పంప గలరు. అవసరమైన ఫారాలు జిరాక్స్ చేసుకోవచ్చును.

ఆర్య సమాజ్ .... యొక్క సభాసదుల పట్టిక

క్రమ సంఖ్య	పేరు	వయస్సు	వార్షిక చందా రుసుము
1)			
2)			
3)			
4)			
5)			
6)			
7)			
8)			
9)			

మంత్రి **ప్రధాన్**

ఆర్యసమాజము ....

आर्य समाज ——————

मंडल —————————— जिला ——————————

की सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नाम करने तथा सभा के अनुशासन में रहने का शपथ पत्र (AFFIDAVIT)

आर्य समाज —————————————— की अचल सम्पत्ति निम्न लिखित है। जो मुनसिपल / ग्राम पंचायत में आर्य समाज के नाम से अंकित है तथा आर्य समाज के नाम /आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नाम रजिस्टर्ड है /नहीं हैं।

————————————————————————————————

दिनांक : ———————————— को आयोजित आर्य समाज की यह साधारण सभा सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित करती है कि यह समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, सुल्तान बाजार, हैदराबाद के अंतर्गत है तथा उसी के अनुशासन में रहेगी। अनुबंधित संस्था होने के नाते इसकी समस्त अचल सम्पति की अधिकारिणी (ownership right) आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश रहेगी। घोषित - अघोषित समस्त चल-अचल सम्पति की मालिक सभा ही रहेगी तथा विवाद के समय भी अंतिम निर्णय सभा का ही रहेगा, जो कानुनन वैध माना जयेगा।

हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि प्रस्ताव तथा चित्र में जो कुछ लिखा व दिखाया गया है वह ठीक है तथा न दिखाई गई समाज की समस्त चल-अचल सम्पति पर भी सभा को ही मालकीयत का (ownership right) अधिकार रहेगा।

यह समाज सभा की धारा १०, ११, १२, १३, १४, १६, ४६, ४७, ४८, ४९, ५६, ५७, ५८, उपनियम धारा (२) आदि को विशेष एवं समस्त धाराओं को मानेगा तथा सभा की आज्ञाओं के विरुद्ध अपने यहाँ कोई कार्यवाही न होने देगा तथा जो नियम आर्य समाज के लिए समय-समय पर सभा बनाएगी, उनका यह समाज पालन करेगी और सभा द्वारा नियत शुल्क दिया करेगी।

सभा के नियमोपनियम के विरुद्ध कार्य करने पर, हिसाब ठीक-ठाक न रखने एवं न बताने पर सभा को अधिकार रहेगा कि समाज को भंग कर तदर्थ समिति बनाए या समस्त सम्पति के साथ समाज को अपने स्वाधीन कर लें। सभा द्वारा समाज की सम्पति को अपने आधीन करने की कार्यवाही को कानूनन वैध माना जायेगा। जिसे हम स्वीकार करते है।

कोषाध्यक्ष **मंत्री** **प्रधान**

आर्य समाज..

ఆర్య సమాజ్ .... యొక్క ఆదాయ వ్యయముల పట్టిక

ఆదాయము		వ్యయము	
1) మూడు సంవత్సరాల సభ్యుల చందా నుండి ఆదాయము	రూ	1) యజ్ఞం పై ఖర్చు	రూ ....
2) మూడు సంవత్సరాల కిరాయ నుండి వచ్చిన ఆదాయమ	రూ.	2) సమావేశాలపై ఖర్చు	రూ. ....
3) ఇతర పద్దుల ద్వారా వచ్చిన ఆదాయము	రూ.	3) ఇతర ఖర్చులు	రూ. ....
మొత్తం ఆదాయము	రూ............	4) మొత్తం ఖర్చులు	రూ............

కోశాధ్యక్షులు   మంత్రి   ప్రధాన్

ఆర్యసమాజము ....

आर्य समाज के द्वारा देय शुल्क निम्नलिखित है

१)प्रथम ९ सभासदों पर १ प्रतिनिधि

दशांश	रु. ७५०-००	Rs.	750-00
प्रवेश शुल्क	रु. २५-००	Rs.	25-00
आंदोलन शुल्क	रु. ३००-००	Rs.	300-00
प्रतिनिधि शुल्क	रु २५-००	Rs.	25-00
कुल	**रु ११००-००**	**Rs.**	**1100-00**

२)कुल २९ सभासदों पर २ प्रतिनिधि

दशांश	रु.२१७५-००	Rs.	2175-00
प्रवेश शुल्क	रु. ५०-००	Rs.	50-00
आंदोलन शुल्क	रु ३००-००	Rs.	300-00
प्रतिनिधि शुल्क	रु ५०-००	Rs.	50-00
कुल	**रु २५७५-००**	**Rs.**	**2575-00**

३) कुल ४९ सभासदों पर ३ प्रतिनिधि

दशांश	रु.३६७५-००	Rs.	3675-00
प्रवेश शुल्क	रु. ७५-००	Rs.	0075-00
आंदोलन शुल्क	रु ३००-००	Rs.	0300-00
प्रतिनिधि शुल्क	रु ७५-००	Rs.	0075-00
कुल	**रु ४१२५-००**	**Rs.**	**4125-00**

४) कुल ६९ सभासदों पर ४ प्रतिनिधि

दशांश	रु. ५१७५-००	Rs.	5175-00
प्रवेश शुल्क	रु. १००-००	Rs.	0100-00
आंदोलन शुल्क	रु ३००-००	Rs.	0300-00
प्रतिनिधि शुल्क	रु १००-००	Rs.	0100-00
कुल	**रु ५६७५-००**	**Rs.**	**5675-00**

५) कुल ८९ सभासदों पर ५ प्रतिनिधि

दशांश	रु. ६६७५-००	Rs.	6675-00
प्रवेश शुल्क	रु. १२५-००	Rs.	0125-00
आंदोलन शुल्क	रु ३००-००	Rs.	0300-00
प्रतिनिधि शुल्क	रु १२५-००	Rs.	0125-00
कुल	**रु ७२२५-००**	**Rs.**	**7225-00**

१) समाज की सम्पत्ति से तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त निश्चित आय का २ प्रतिशत प्रतिवर्ष या प्रति तीन वर्ष में केवल एक बार सभा के चुनाव के समय समाज की सम्पत्ति से तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त कुल निश्चित आय पर रु.५०००/-मात्र (रुपए पाँच हज़ार), दोनों में जो कम हो, देय होगा ।

प्रधान   मंत्री

आर्य समाज -------------- आंध्र प्रदेश

नम आँखें वोझिल पलकें

- *राजेंद्र प्रसाद आर्य*

श्री. पी. वी. मेनन ने अपने ग्रंथ दि स्टोरी ऑफ 'दि इन्टीग्रेसन ऑफ दी इण्डियन स्टेटस' में लिखते हैं कि जो राष्ट्र अपने अतीत कालीन उत्थान और पतन के इतिहास से शिक्षा नहीं लेता, उसे कालान्तर में विनाश के मुख में जाने से कोई नहीं रोक सकता।

वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देश के साथ हो रही अनेकों घटनाओं को देखने से यही लगता है कि अपनी ऐतिहासिक भूलों के जो भयंकर दुष्परिणाम इस देश को भुगतने पड़े हैं, उससे हमने कुछ वी सबक नहीं लिया है। कभी भारत का विस्तार जावा, सुमात्रा, बाली, वर्मा और अफगानिस्तान तक रहा है, लेकिन धीरे-धीरे वो हमसे कटते गए और अलग राष्ट्र बनते चले गए और भारत की सीमाएँ सिमटती चली गई और इसी भयंकर भूलों के परिणामस्वरूप ही हम १००० वर्षों तक गुलाम रहे। अंग्रेजों की साज़िश के तहत भारत की विभाजन की शर्त पर भारत को आज़ादी मिली। और वह भी उपहार स्वरूप नहीं, बल्कि घातक शर्तो के साथ भारत विभाजन के फेसले को स्वीकार कर लेना भी हमारे तात्कालीन राजनेताओं की एक भारी भूल थी। जिसका दुष्परिणाम हमें उस समय से आज तक भुगतना पड़ रहा है। १४ अगस्त १९४७ को पाकिस्तान तथा १५ अगस्त १९४७ को भारत को आज़ादी मिली और एक नये राष्ट्र पाकिस्तान का अभ्युदय हुआ और हमारी एक गलत नीति के कारण शुरु हुआ एक भयंकर रक्तपात और परिणामस्वरूप करीब १० लाख से भी अधिक लोगों का कत्लेआम हुआ और करीब तीन करोड़ लोग विस्थापित हुए, जिसमें मुख्य रूप से हिन्दु और सिख ही थे। अगर इसी प्रकार विभाजन होते रहे, तो भारत का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वो भयंकर रक्तपात भी उस भूल की पहली कड़ी थी और पाकिस्तानी जेल में बंद भारतीय कैदी सरबजीत सिंह की हत्या भी अभी तक की अंतिम कड़ी है।

पाकिस्तान ने आज़ादी के ६६ वर्ष के अन्दर ही भारत पर तीन-तीन बार युद्ध थोपे। १९६५ में, १७१ में और १९९९ में कारगिल युद्ध। तीनों बार भारत से बुरी तरह पराजित होने के बाद पाकिस्तान बौखला सा गया है, और तभी से उसने भारत के साथ परोक्ष रूप से युद्ध छेड़ रखा है।

ज़रा इसे देखिए : -

१ वर्ष १९९९ में कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तान ने भारत के कैप्टन सौरभ कालिया और उसके चार साथियों को युद्धबंदी बनाकर अपने साथ ले गए और उन सबकी हत्या कर उनकी क्षत-विक्षत लाशों को भारतीय सीमा में फेंककर चले गये। युद्ध बंदियों के साथ इस प्रकार की अमानवीय निर्मम हत्या जेनेवा समझौते का खुला उल्लंघन है, मगर हमारी सरकार इस घटना को इस प्रकार नज़रंदाज़ कर गई, मानो कुछ हुआ ही नहीं।

२. पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकियों ने हमारे संसद भवन और राजनेताओं को उड़ाने के वास्ते हमले किये थे। मगर संसद भवन में हमारे सुरक्षा गार्डों ने अपनी जान की बाज़ी लगाकर उसे विफल कर दिया। अगर वे अपने मंसूबों में कामयाब हो जाते, तो पता नहीं क्या हो जाता।

३. २६ नवम्बर को पाकिस्तानी आतंकियों ने ही मुंबई के ताज होटल एवं अन्य दूसरे स्थानों पर आतंकी हमले किये, जिसमें हमारे जाँबाज़ पुलिस अफसर करकरे समेत कुल १६६ लोग मौत के घाट उतार दिये। इतने बड़े आतंकी हमले के बाद लगा कि हमारी सरकार कुछ उत्तेजित हुई है, मगर धीरे-धीरे वो फिर शांत हो गई।

४ . जनवरी २०१३ में ही पाकिस्तानी जेल में बंद एक भारतीय कैदी चमेल सिंह की कातिलाना हामला कर हत्या की गई, जिस पर हमारी सरकार सिर्फ निंदा ही कर सकी।

५. अभी भी कुछ दिन पहले सीमा पर गश्त कर रहे दो भारतीय सैनिकों का सिर काटकर पाकिस्तानी सेना वह अपने साथ ले गई। सैनिकों के परिवार वाले निरंतर सरकार सेअपने बेटे के कटे हुए सर की माँग करती रही, पर सरकार कुछ नहीं कर सकी। उसी के बाद पाकिस्तानी प्रधानमंत्री अजमेर शरीफ तिजारथ को आए, जहाँ अजमेर शरीफ के मुख्य मौलवी ने उन्हें तिजारथ करने से मना कर दिया। वहीं हमारे विदेश मंत्री ने उनका तहे दिल से स्वागत किया। आखिर कैसी है हमारी विदेश नीति।

६. एक भारतीय किसान सरबजीत सिंह गलती से सीमा पार करके पाकिस्तानी सीमा में चला गया था। जहाँ से पाकिस्तानी सेना उसे पकड़कर ले गई और लाहौर में बम धमाके में मंजीत सिंह के बदले उसे आरोपित कर उसके खिलाफ अभियोग चलाया और कोर्ट से उसे फाँसी की सज़ा बहाल हुई। मगर इसी २६ अप्रैल को जेल में ही दूसरे कैदियों से उस पर हमला करवा दिया, जिनकी बाद में मौत हो गई। ३ मई को सरबजीत सिंह का शव बिना दिल और किड़नी के भारत लाकर दफनाया गया। सरबजीत सिंह और उसके परिवार वालों द्वारा बार-बार उसकी हत्या की आसंका की गुहार लगाने के वाद भी हमारी सरकार पाकिस्तान पर न तो कोई दबाव बना सकी और विश्व जनमत ही तैयार कर सकी। मृत्यु उपरान्त सरकार ने उसके परिवार को मुआवजे देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली।

पाकिस्तान द्वारा की जाने वाली ये सभी हरकतें तो भारत को नीचा दिखाने के वासेते ही हैं। मगर उसके मुख्य अपराध है, उसके आतंकियों द्वारा भारत पर बार-बार किये जाने वाले हमले। जिस प्रकार राजे महाराजे मन वहलाने के लिए जंगल में शिकार खेलने जाते हैं, आखेट खेलते हैं ठीक उसी प्रकार ये आतंकी भारत पर आतंकी हमले करने अखेट पर आते हैं और धरती को लहुलुहान कर निर्दोष लोगों की हत्या कर वापस लौट जाते हैं। कभी संसद भवन, कभी अक्षरधाम मन्दिर, कभी कोर्ट परिसर, कभी कोई रिहायशी इलाका, कभी मुम्बई, तो कभी जयपुर कोई भी क्षेत्र इनका निशाना हो सकता है। कभी भी हमारी सरकार इसके खिलाफ आक्रामक नहीं रही। हमेशा ही रक्षात्मक रवैया ही रहा है, जिस वजह से आतंकवादियों के हौसले बुलंद हुए हैं। अब तक इस आतंकवाद ने पंजाब में २०,०८०, जम्मू-कश्मीर में ४०,००० और देश के विभिन्न हिस्सों में ५,००० कुल ६५,००० लोगों की हत्या कर चुका है। मगर महात्मा गांधी के अहिंसा के अनुयायी हमारी सरकार कभी भी इसे जड़ से खत्म करने वास्ते कोई प्रभावी योजना नहीं बना सकी है। शेर का शिकार बन जाना अहिंसा नहीं, कायरता है और शेर के जबड़े को तोड़कर धाराशायी कर देना हिंसा नहीं, वल्कि पुरुषार्थ

गरीबी, हिंसा और अन्याय

- अमर्त्य सेन

यदि दुनिया के बहुत से लोगों के मन में विश्व में चल रही हिंसा के साथ धर्म और समुदाय जड़े हुए हैं, तो उसी तरह विश्व में फैली गरीबी और असमानता भी जुड़े हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया में गरीबी हटाने की नीतियों का समर्थन इस आार पर विशेष रूप से किया जा रहा है कि राजनीतिक संघर्ष तथा उपद्रवों को कम करने का यह सर्वोत्तम उपाय है। अन्तर्राष्ट्रीय तथा घरेलू सार्वजनिक नीति को इस आधार पर चलाने के कुछ स्पष्ट लाभ तो हैं ही। दुनिया के धनी देशों में युद्ध तथा अराजकता के विरुद्ध जनता की चिन्ता को देखते हुए जिसे गरीबी हटाने का प्रत्यक्ष कारण भी माना जाता है, गरीबी के हित में नहीं, बल्कि दुनिया में शान्ति तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपने हित साधन के साथ ही ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए एक अच्छा तर्क प्राप्त हो जाता है। यह तर्क एक साथ राजनीतिक दृष्टि से लाभदायक होते हुए भी नैतिक तर्क न होने पर भी गरीबी हटाने के लिए ज्यादा संसाधनों का जुगाड़ करने को तैयार हो जाता है। यह तर्क एक साथ राजनीातिक दृष्टि से लाभदायक होते हुए भी, नैतिक तर्क न होने पर भी, गरीबी हटाने के लिए ज्यादा संसाधनों का जुगाड़ करने को तैयार हो जाता है।

इस दिशा में जाने का आकर्षण आसानी से समझ में आता है। परंतु उद्देश्य अच्छा होते हुए भी उसकी प्राप्ति का यह मार्ग खतरनाक है। इस कठिनाई का एक भाग तो यही है कि इस गलत आर्थिक सरलीकरण से हमें दुनिया को सही ढंग से समझ पाने की संभावना कम हो जाती है, दूसरा यह कि गरीबी हटाने के लिए सार्वजनिक प्रतिबद्धता को भी चोट पहुँचती है। यह बहुत गंभीर प्रश्न है, क्योंकि गरीबी और व्यापक असमानता अपने आप में भयंकर समस्याएं हैं, और हिंसा से इनका कोई संबंध न हो, तो भी इन्हें वरीयता दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि सद्गुण स्वयं मे अपना ईनाम है। इसी प्रकार कहा जा सकता है कि गरीबी स्वयं में मनुष्य के लिए दण्ड है। यह कहना इस बात से इनकार करना भी नहीं है कि गरीबी और समानता द्वन्द्वता संघर्ष के साथ दूर तक जुड़ सकते हैं - जुड़ं होते भी हैं, लेकिन किसी 'अच्छे उद्देश्य' के लिए काम करने के कारण इन्हें स्वीकार करने के स्थान पर इनकी बहुत ध्यानपूर्वक अनुभव के ठोस आधारों पर जाँच-पड़ताल और समीक्षा करनी चाहिए। यह सही है कि अभाव मनुष्य को स्थापित नियम-कानून का उल्लंघन करने को प्रोत्साहित करते हैं, परंतु कुछ बहुत ज्यादा हिंसक कार्य कर गुज़रने की प्रेरणा, हिम्मत तथा योग्यता देने से इसे परहेज़ करना चाहिए। अभावों का परिणाम आर्थिक कठिनाइयाँ तो होता हैं ही, इससे राजनीतिक असाहायता की स्थिति भी उत्पन्न होती है। भूख से दुर्वल आदमी लड़ने- झगड़े में तो कमज़ोरी का अनुभव करता ही है, उसे चिल्लाने और नारे लगाने में भी कठिनाई होती है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि कई दफा गहरी और बड़े पैमाने पर फैली परेशानियाँ बेहद चुप्पी और शांति में रह जाती है।

दुनिया में ऐसे अनेक अकाल पड़े हैं, जो बिना किसी राजनीतिक विद्रोह, आपसी लड़ाई - झगड़ों या अंतर्जातीय संघर्षों के चुपचाप चुपचाप गुज़र गये हैं। उदाहरण के लिए १८४० के वर्षों में आयरलैण्ड का अकाल इतनी शांति से बीता कि उनके ही बीच होकर शैनन नदी से खाने-पीने के भरे जहाज गुजरते चले जाते थे और वहाँ के भूख से तड़पते लोगों ने इन पर एक बार भी हमला नहीं किया। मज़े की बात यह है कि जहाजों में आयरलैण्ड में पैदा किया गया अन्न आदि ही भरा होता था। जो यहाँ से इंग्लैण्ड ले जाया जाता था। क्योंकि वहाँ के लोगों के पास अन्न खरीदने लायक पैसा होता था। आयरलैंड के लोग चुपचाप सहन करने के लिए कभी मशहूर नहीं रहे हैं, लेकिन अकाल के वे वर्ष कुछ अपवादों को छोड़कर उनके बहुत शांति से बिताए वर्ष रहे हैं। कहीं और की बात की जाए, तो मैंने अपने बचपन में १९४३ में बंगाल में पड़े अकाल में देखा है, सड़कों के किनारे पड़े लोग भूख से मर रहे हैं और सामने मिठाई की कतारें सज़ी हैं। मैंने कभी एक भी शीशा टूटा नहीं देखा। शांति और कानून की व्यवस्था बदस्तूर कायम रही। बंगाल के लोग अनेक हिंसक विद्रोहों के लिए जिम्मेदार रहे हैं - जिनमें से एक १९४३ के अकाल से ठीक एक साल पहले १९४२ में ही हुआ था- लेकिन अकाल के व, में शांति को कोई ठेस नहीं पहुँची।

इस संबंध में समय की समस्या भी महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अन्याय की अनुभूति साल-दर साल मनुष्य के मन में पनपती रह सकती है। अकाल या किसी दूसरे प्रकार का अभाव तो समाप्त हो जाता है, उसके दुष्प्रभाव भी खत्म हो जाते हैं, लेकिन कंठों की स्मृतियाँ मन को टीसती रहती हैं।

गरीबी और विनाश की यह पीड़ा बाद में किसी भी समय फिर से जगाई जा सकती है और उसके सहारे कोई विद्रोह खड़ा किया जा सकता है। १८४० के वर्षों का अकाल भले ही शांतिपूर्वक गुज़र गया हो, लेकिन ब्रिटेन द्वारा आयरलैण्ड की उन दिनों की गई आर्थिक और राजनीतिक उपेक्षा और अन्याय बाद के १५० वर्षों में इंग्लैंड के खिलाफ निरंतर हिंसा का प्रमुख कारण बना रहा। आर्थिक अभावों का परिणाम तुरंत हिंसा में भले ही व्यक्त न हो, लेकिन इस कारण यह मान लेना सही नहीं होगा कि गरीबी और हिंसा में कोई आपसी संबंध नहीं है। अफ्रीका की वर्तमान स्थिती की उपेक्षा भविष्य में दुनिया के लिए इसी प्रकार की लम्बी अशांति का कारण सिद्ध हो सकती है। इन दिनों दुनिया, विशेषकर धनी देशों ने, अफ्रीका के लिए जो कुछ किया या नहीं किया, जब महाद्वीप के कम से कम एक-चौथाई लोग एड्स, मलेरिया तथा अन्य घातक बीमारियों से आगे बिल्कुल नष्ट होते चले जा रहे हैं। झूठ समय तक नहीं भुलाया जा सकेगा। समय रहते हमें यह पूरी स्पष्टता से समझ लेना चाहिए कि गरीबी, अभाव और अपेक्षा तथा शक्ति की असामनता के कारण हुए अपमान, लंबे समय तक भीतर ही भीतर घुटते रहकर, किसी प्रकार हिंसा, नये पैदा होने वाले मुकाबलों में विभाजित पहचानों में बँटी इस दुनिया में अपनी शिकायतों की यादों के सहारे हिम्मत में तब्दील होने लगते हैं।

यह नाराज़गी का पर्याप्त कारण हो सकती है, लेकिन अपमान, दुर्दशा और अतिक्रमण की भावनाएं आसानी से संघर्ष तथा विद्रोह के लिए लोगों को तैयार कर देती है। फिलीस्तीनियों को हटाने, दबाने और हराने की इस्राइल की क्षमता, सैनिक शक्ति की सहायता से, तुरंत प्राप्त थोड़े-बहुत लाभों की तुलना में लम्बे समय तक गंभीर परणिामकारी बनी रहती है। फिलीस्तीनियों के अधिकारों के निरंकुश अपहरण से उत्पन्न अन्याय की भावना हर समय विरोध करने के लिए तैयार खड़ी रहती है। जिसे हिंसक प्रतिक्रिया के रूप में देख लिया जाता है। बदले की यह भावना फिलीस्तीनियों के अलावा उनसे भी बड़े-बड़े अरब मुस्लिम और तीसरी दुनिया के अनेक देशों में भी व्यक्त की जाने लगती है। यह भाव की दुनिया सबल और दुर्बल के दो भागों में बँटी हुई है, दुर्बलों में असंतोष के भाव उत्पन्न करने में सहायक होती है, जिससे बदले के उद्देश्य से संघर्ष करने के लिए सैनिकों की भरती के रास्ते खुल जाते हैं। यह सब किस प्रकार काम करते हैं, इसे समझने के लिए हसिक प्रतरोिध के नेताओं ----- के प्रबलों का, जिनके समर्थन पर ये नेता खड़े होते हैं, अंतर समझना आवश्यक है। ओसामा बिन लादेन जैसे नेताओं को गरीबी जैसी चीज़ों का इस एक बात को ही लिया जाए, तो कोई अनुभव नहीं होता, न इन्हें विश्व पूँजीवाद के लाभों से

वंचित रह जाने की शिकायत होती है। लेकिन ऐसे समृद्ध नेताओं के अधीन चलने वाले आंदोलन, अन्याय, अपमान और दमन की भावनाओं से जिन्हें वे विद्यमान व्यवस्था द्वारा निर्मित मानते हैं- स्वयं को पीड़ित अवश्य मानते हैं। गरीबी तथा आर्थिक विषमता एकदम आतंकवाद को जन्म देने अथवा आतंकवादी संस्थाओं को प्रभावित करने का कार्य भले ही न करती हो, लेकिन आतंकवादी शिविरों के लिए सिपाहियों की भर्ती की भूमिका वे अवश्य तैयार कर देती है।

दूसरी बात यह है कि आज की दुनिया के अनेक भागों में अपेक्षाकृत शांतिप्रिय लोगों द्वारा आतंकवाद के प्रति सहिष्णुता की भावना भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है। यह ज्यादातर ऐसे देश हैं, जहाँ आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति में पीछे छूट जाने का भाव प्रवल है अथवा जो किसी राजनीतिक शक्ति द्वारा भूतकाल में कभी अपने को सताया हुआ मानते हैं, वैश्विकरण से होने वाले लाभों में अपना सही हिस्सा प्राप्त करने वाले लोग, आने वाले समय में १) आतंकवाद से लड़ने के लिए सिपाही भरती करने तथा २) आतंकवाद को वर्दाश्त करने कहीं-कहीं उसका उत्सव भी मनाने दोनों की स्थितियों को रोकने के कार्यों में अपना योगदान कर सकते हैं। भले ही गरीबी और वैश्विक अन्याय के भाव तुरंत हिंसक घटनाएं अंजाम देने के कार्य न करते हो, इनसे ऐसे संबंध अवश्य विकसित होने लगते हैं, जो कुछ समय तक कार्यरत रहने के वाद हिंसक वारदातों की संभावनाओं को पुष्ट करते रहते हैं। मध्य-पूर्व के देशों की यह बावना की पाश्चात्य शक्तियों ने कुछ दशक पहले या पूरी एक शताब्दी पहले उनके साथ दुर्व्यवहार किया है। ये यादें पश्चिम एशिया में आज तक विविध रूपों में जिंदा है, इन्हें फिर से जगाकर और ज़रूरत से ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने से मुकाबले के लिए कटिवद्ध नेता हिंसक संघर्षों के लिए सिपाहियों की भरती करने में इनका इस्तेमाल करते हैं। विशेष रूप से अपनी अफगान नीति के कारण सोवियत यूनियन के विरुद्ध पश्चिम एशिया का रोप आरंभिक दिनों में अमेरिकनों को शीत युद्ध में लड़ाई का एक अच्छा हथियार प्रतीत हुआ हो। परंतु कुछ ही समय बाद इस्लाम द्वारा अमेरिका और यूरोप दोनों को एक ही 'पश्चिमी' पहचान के रूप में लिये जाने के कारण उनकी दृष्टि में पूंजीवादी अमेरिका और साम्यवादी सोवियत संघ में अंतर नहीं था। इस घटना की दिशा परिवर्तित हो गई, जिसका परिणाम दोनों पक्षों के लिए घातक सिद्ध हुआ। इस द्विपक्षीय वर्गीकरण में वैश्विक अन्याय के विरुद्ध भापणबाज़ी अपनी रचनात्मक क्षमता से विमुख हो गई और आवश्यकता नुसार थोड़ासा परिवर्तन करके हिंसा तथा प्रतिशोध का वातावरण गर्माने में प्रयुक्त की जाने लगी।

(पृष्ठ १५ का शेष)

है। कौन जिम्मेवार है इस देश के ६५००० निर्दोष नागरिकों की आकस्मिक मौतों का? हमारे राजनेता तो किलानुमा हवेली में सुरक्षित हैं। क्योंकि सुरक्षा गार्डों के बड़े हिस्से को अपनी सुरक्षा में लगा रखा है, पर निरीह जनता भागवान भरोसे है।

पाकिस्तान की तरह चीन भी बमें बार-बार ललकारता है। पर फिर भी हम कुछ भी समुचित जवाव देने से बचते हैं। अभी भी चीनी सेना भारतीय सीमा में १९ किलोमीटर तकप्रवेश कर गयी। उस पर हमारे राजनेता का बयान कितना दुखदायी है कि वो तो नो मैन्स लैण्ड है तो क्या जब वो दिल्ली तक आ जाएगी तब तक सोचेंगे?

चीन और पाकिस्तान की ही बात नहीं है। हमारे छोटे-छोटे पड़ोसी देश बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका और नेपाल भी भारत को नीचा दिखाने से बाज़ नहीं आता है। ज़रा इसे देखिए।

१- बांग्लादेश की हीबात करें, जो बांग्लादेश १९७१ में हमारे सहयोग के बल पर ही एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया, उसी बांग्लादेश की सेना ने वर्ष २००१ में हमारे बी.एस.एफ. के १६ जवानों की हत्या कर दी और दो जवानों की आँखें निकाल ली। २. मालदीव ने भी अपने आन्तरिक मामले में दखल नहीं देने की भारत को चेतावनीदी है।

३. श्रीलंका के आत्मघाती दस्ते ने तो हमारे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या कर दी।

४. रही नेपाल की बात, तो नेपाल के रास्ते ही आतंकी भारत में प्रवेश करते हैं और यहाँ आकर आतंकी हमले करते हैं फिर बी नेपाल इसे रोक पाने में गंभीर नहीं है।

इन सब बातों से जनता शर्मसार है।हमारी सेना का भी मनोबल टूट रहा है। मगर हमारी सरकार निश्चिंत है।

मैं कोई राजनीतिक समीक्षक नहीं हूँ। और न ही रक्षा विश्लेषक, मगर एक जागरूक नागरिक होने के नाते अपनी सरकार के राष्ट्रीय नेतृत्व से जानना चाहता हूँ कि हमारी राष्ट्र की आन, वान और शान का क्या होगा? आखिर कब तक हमारी आँखें नम और पलकें बोझिल रहेगी, आखिर वो कब तक लाल होगी और कब हमारा स्वाभिमान जागेगा?

(पृष्ठ ६ का शेष)

रहस्यों से पर्दा उठा सकूँ, जिससे आपके अच्छे पिता होने का सबूत मिल सके? जिन मित्रों की तुलना में अथवा जिनके संरक्षण में आपने मुझ पर यह वार किया है, कि वे अच्छे पिता है वा पति है। क्या आप अपने मित्रों के जीवन के कालिमा युक्त इतिहास से परिचित है। क्या धर्मवीर, क्या विरजानन्द और क्या सुरेन्द्र। मुजे आपकी लिखित अनुमति चाहिए कि मैं इनके काले इतिहास के पन्नों की इतिहास के झरोखों से आपको दर्शन करा सकूँ। लेखनी तो इस समय भी सशक्त है। सब कुछ कुरेदने वा लिखने में- लेकिन यदि आपसी अनुमति लिखित मिल जाए, तो अच्छी तरह सब कुछ लिखने में आसानी हो जावे।

इस समय तो कोई यह भी कह सकता है कि आप भी जिज्ञासु की तरह वेशर्म बन गए हैं। जो व्यक्ति आकण्ठ पापपङ्क में धंसे हुए हैं, उनसे दुर्गन्ध में डन्डी मारने से उठी बदबू में खुशबू आती है। पर मैं अभी इतना तुम्हारी तरह निर्लज्ज नहीं बनना चाहता हूँ। हो सकता है कि कभी-व्यक्ति दूसरों के विषय में कहने से पहले अपनी कालिमायुक्त जीवनी का पता न हो तो उसकी जिम्मेदारी हम ले लेते हैं। - आपको बताने की । तव पूछूँगा कि इन सव आपके मित्रों में कौन अच्छा पति हैवा पिता है। अथबा पतित्व की किन-किन स्थितियों में कैसी कैसी परिभाषा संभव है? तभी मेरे आचरण की अच्छी स्थिति पता लग सकेगी। तुम्हारे इन मित्रों में मुझ हीन चरित्रवाले से जिसकी हिम्मत हो, शास्त्रार्थ में आ जावेष साधना की स्थिति में जमकर बैठ सके। अथवा शास्त्रों की गहरी पैठ में आ जावे। अगर आप इनके शिरोमणि सरदार बनकर साथ में आना चाहे - तो आइये। संदर्भ में आपको पुरस्कृत करूँगा।

मैं इतना हीन उपदेशक नहीं हूँ, जो किसी से डरता हूँ। तुम्हारी औकात बताने का सामर्थ्य रखता हूँ। जिज्ञासुजी आप द्वारा लिखित अनुमति तथा आपके मित्रों की उस लिखित अनुमति पर यह अनुशंसा कि हमें कोई आपत्ति नहीं कि आप हम सबके विषय में लिख सकते हैं। चाहिए - **इति.**

दूरदर्शन विज्ञापन और समाज

- प्रा. मेजर डॉ. नारायण राऊत

मनुष्य सजीव प्राणी है। आज रोटी, कपड़ा और मकान की भाँति 'जन संचार' भी मनुष्य की मूलभूत ज़रूत बन गई है। इनकी आपूर्ति हेतु मनुष्य ने नये-नये साधनों का आविष्कार किया है। जन संचार को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि, जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाते हैं और वही प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है, वह जनसंचार कहलाती है।

संचार के इसी स्वरूप को विविध माधयमों द्वारा लोगों तक पहुँचाने कार्य आज तक हुआ है, जिसमें संकेत बोली, चित्रांकन, चित्रभाषा, लिपि-पत्र, सूचना-पत्र, पुस्तक समाचार-पत्र, सिनेमा, रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, सेटेलाइट, नेटवर्क, लैपटॉप आदि विविध माध्यम प्रचलति हैं। 'दूरदर्शनजन संचार का सबसे तेज़ और प्रभावशाली इलेक्ट्रॉनिक दृक्-श्राव्य माध्यम है। दूरदर्शन का आविष्कार एल. बियर्ड ने सन १९२५ ईसवी में किया। सन१९३६ को लंदन में बीबीसी द्वारा टीवी का प्रसारण शुरू हुआ। भारत में १५ सितंबर १९५९ को राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसादजी के हाथों टीवी का उद्घाटन हुआ। प्रारंभ में स्कूली शिक्षा एवं ग्रामीणों के विकास के लिए उसका उपयोग किया गया, लेकिन बाद में लोकरुचि को ध्यान में रखकर इसके विविध कार्यक्रम दिखाने शुरू हुए, जो बहुत ही प्रसिद्ध हुए। इसकी वजह यह थी कि इन कार्यक्रमों का प्रसारण करने के लिए बड़ी-बड़ी कंपनियाँ और उनके विज्ञापन थे। जो प्रायोजक थे। आज इन विज्ञापनों ने बाज़ार में हंगामा मचा रखा है। क्या हैं ये विज्ञापन? विज्ञापन वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र का ऐसा अंग है, जो प्रतिष्ठान के प्रति जनमत तैयार करने में सर्वाधिक उपयोगी है। अंग्रेज़ी के 'एडवर्टाइजिंग' का हिन्दी पर्याय है, जिसका अर्थ है ज्ञात कराना अथवा सूचना देना है। पाश्चात्य विद्वान फ्रेंक प्रेस्वी के अनुसार विज्ञापन मुद्रित, लिखित, उच्चरित अथवा चित्रित विक्रय कला है। पाश्चात्य व्यंग्यकार ब्रिक के अनुसार बिना विज्ञापन व्यापार करना किसी खूबसूरत लड़की को अंधेरे में मुँह चिढ़ाना है। तुम तो जानते हो कि उस समय तुम क्या कर रहे हो, पर दूसरा कोई नहीं जानता। सी. बर्टेव्ह आर. केन फिल्ड एवं एच. प्रेचरमून के अनुसार विज्ञापन लोकहित के प्रोत्साहन के लिए किया जाता है। अतः वह लोकसेवा है।

स्पष्ट है कि विज्ञापन एक कला है, जिसका उद्देश अपनी बात का भुगतान देकर प्रचार-प्रसार करना तथा जन समाज तक अपनी बात पहुँचाकर अपनी वस्तु की कपत बढ़ाना है।

आरंभ में दूरदर्शन का उद्देश्य जन शि७ण, छात्रों के लिए शिक्षा सामग्री एवं सूचनाओं का प्रसारण करना अर्थात आदमी को इन्सान बनाना है। परंतु ऐसा हुआ नहीं। इस संबंध में सुधी पचौरी लिखते हैं कि टीवी पर हम लोग शुरु हुआ था। परविार नियोजन, मद्य-निषेध की जनशिक्षा के लिए किंतु खत्म हुआ दादा-दादी के तीर्थाटन में ये जो है जिंदगी और खानदान जैसे सिरीयल किसी ऐसी उमंग की पैदाइश थे, जिसमें दूरदर्शन को गंभीरता से ले लिया गया था और कुछ सिरफिरी जनता को शिक्षा देने की प्रगतीशील बातों के लायक थे चूँकि वे प्रगतीशील थे, इसलिए उन्हें यह मालूम ही नहीं पड़ा कि जन शिक्षा कह रहे हैं, वह प्रायोजकों, विज्ञापनदाताओं और उद्योगपतियों का संयुक्त कारोबार है और उसे लोगों को जूते खरीदने, साड़ी धोने, मैगी खाने, दाँत चमकाने, घर में ट्यूब बल्ब लगाने, प्रेशर कुकर की सीटी बजाने, सिरदर्द की गोली खाने और निरोध के फायदे बताने में काम आना है। आगे रामायण, महाभारत, चाणक्य, भारत एक खोज आदि सिरियलों में विज्ञापनदाताओं ने सरकार को काफी राजस्व दिया और यह सिलसिला चलता रहा। प्रायोजकों से जुड़े विज्ञापनदाताओं और व्यापारियों के हाथों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता, इतिहास और परम्पराएं प्रर्शित करने का हक दिया और विज्ञापन एजेंसियों ने दूरदर्शन को विज्ञापन दर्शन बना दिया।

स्पष्ट है विज्ञापन और दूरदर्शन संचार के दोनों माध्यम बहुत ही प्रभावशाली हैं। जो समाज-सुधार और मानव मूल्यों को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। परंतु आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपने मूल उद्देश्यों को दूर रखकर इसे केवल पैसा कमाने का एक ज़रिया बनाया है और समाज को ऐसी दुनिया का सपना दिखाया, जो वास्तवकिता से कोसों दूर है। असलियत के बता देने के बजाए जो न हो, उसे विज्ञापन में दिखाया जा रहा है। इसलिए नकली चीज़ों का विज्ञापन तगड़ा हो गया और समाज उसे असली समझकर घर में लाने लगा। क्या यह समाज का शोषण नहीं, अब यह शोषण न केवल वस्तु तक सीमित रहा, बल्कि सामाजिक गतिविधियों धार्मिक अनुष्ठानों और मानवीय जीवन मूल्यों को भी इसने घसीटा है। डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय लिखते हैं कि विज्ञापन हमारी संवेदना, संस्कृति, सभ्यता आदर्श की बलि चडा रहे हैं।

ऐसी बाज़ारू बिकाऊ संस्कृति को जन्म दे रहा है कि इसमें मूल्य, नैतिकता आदि की कोई पूछ नहीं रह जाएगी। बस, अजब बाज़ार बनकर रह जाएगी। ऐसी स्थिति में संचार के सारे माध्यम आज पूँजी के हाथ आज खिलौने भर होकर रह गये हैं। इससे जनता को भ्रमित करके अधिकतम लाभ कमाने हेतु अन्धकार में भी रखा जा रहा है। दूरदर्शन विज्ञापन ने जो हंगामा मचाया है, मानो वह भारतीय संस्कृति, सभ्यता और नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा रहा है और केवल वणिक वृत्ति को भोगना चाहता है।

आज टीवी विज्ञापन ने नारी देह को पूरा नंग कर दिया है। जिसे घर में परिवार के साथ बैठकर देखने में शर्म सी महसूस होती है। यह देह प्रदर्शन हमारी संस्कृति और सभ्यता के बिल्कुल विपरीत है। फिर भी टीवी वाले इसे प्रसारित करते हैं। दुख की बात यह है कि इन विज्ञापनों का विरोध भी कोई करता नहीं है। सेंसर बोर्ड व सरकारी नियमों के बावजूद विज्ञापन वाले अपना रास्ता निकाल लेते हैं। और नियम कानूनों के तहत सरकार कुछ नहीं कर पाती। मेक डोनाल्ड बागपाइपर, डिप्लोमेट, रॉयल चैलेंजर, सिग्रेचर जैसी कम्पनियों ने हिन्दी की सुप्रसिद्ध अभिनेत्रियों के हाथों में बोटल और ग्लास तो दिया, साथ ही उसे अर्द्धनग्न भी किया और उसके मुख से ये संवाद जो अश्लील अंदाज में बरगलाये, हैं। देखें- एक हिरोइन कहती है, डिप्लोमेट जहाँ नज़र आये, दिल मचल जाये। दूसरी कहती है, डिप्लोमेट मर्दाना पैमाना है। तीसरी कहती है व्हाट मेक्स वी माई च्वाईस इज हिच च्वाइस -डिप्लोमेट। इन विज्ञापनों का वही अर्थ लिया गया, जो विज्ञापवदाता चाहता था। यानि कि सुंदर नारी को मर्दानगी प्यारी होती है और वह आएगी डिप्लोमेट पीने से। है ना मूर्खता ? मैं पूछता हूँ क्या दूध, दही, मक्खन,

घी खाने वाले मर्द नहीं होते ? सच तो यह है कि घी वीर्य वर्धक है। लेकिन विज्ञापनकर्ता को इससे क्या लेना-देना? वह पैसा कमाना चाहता है। इस तरह के पदार्थों से संबंधित व्यक्ति ही नहीं, उसका पूरा परिवार तबाह हो जाता है। इसे कौन समझाये? सरकार को तो शराब उद्योग से सबसे ज्यादा राजस्व मिलता है। ऐसा ही राजस्व सरकार को देने वाला एक और विज्ञापन है। देखें धूम्रपान। 'चारमीनार पीजिए, चुस्ती पाइये। विल्स का एक कश लीजिए दिनभर की खुशियाँ पाइये। क्या सचमुच धूम्रपान करने से चुस्ती, खुशियाँ आती हैं? वैज्ञानिक इशारा करता है कि धूम्रपान करना शरीर की हानि है। तम्बाकू, सुर्ती, गुटका जैसी चीजों का सेवन करना कैंसर को दावत देना है। फिर भी इन चीजों का विज्ञापन करने वाली एजेंसियाँ ज़ोरों पर विज्ञापन कर रही हैं। पान पराग के विज्ञापन को देखें, जहाँ शादी - व्याह के समारोह में बारातियों का आगमन होता है। इतने में एक युवती पान पराग का डिब्बा पेश करती है। और बाराती उसे बड़े चाव से खाते दिखते हैं।

इसी तरह सिने अभिनेता संजय दत्त हाथ में पान-सितारा गुटका लेकर कहता है- पान सितारा के साथ जीने का मज़ा लो। माणिकचन्द गुटका उँचे लोग, उँची पसन्द ऐसे अनगिनत विज्ञापन ग्राहकों को आकर्षित करते हैं। लेकिन इससे सामाजिक हानि कितनी होती है इस पर एक नजर डालें, तो पता चलेगा कि आज भारत में मरने वालों में सबसे अधिक कैंसर से पीड़ित लोग हैं, जो धूम्रपान करते हैं। इनसे देश कमज़ोर हो जाता है। शक्तिहीन हो जाता है। क्षणभर का नशा जीवन की दुर्दशा है।

टीवी विज्ञापनों में टूथपेस्ट के विज्ञापनों ने इतना हंगामा मचाया हुआ है कि लोग कौन सा टूथपेस्ट इस्तेमाल करें। चूँ कि हर एक टूथपेस्ट निर्माता अपने विज्ञापन द्वारा उसकी विशेषताओं को इस प्रकार प्रसारित करता है कि लोगों ने वही टूथपेस्ट लेगा उनके दाँतों की सुरक्षा। जैसे झाग वाला, लवंग तेल वाला, मस्विाक वाला, नमक वाला, बबूल की मज़बूती वाला, कीटाणुओं का खात्मा करने वाला। दाँतों की सफेदी वाला। चमक वाला.. अब.. ब... इतनी टूथपेस्ट। अब इसमें से हम किसे च्वाइस करें? अब विज्ञापनकर्ता हसीन-खूबसूरत मॉडल का सहारा लेता है, जिसके दाँत सफेद चमकने वाले होते हैं। उसके मुस्कुराने पर दाँतों की सफेदी पर फिदा युवक क्लोजअप हो जाता है। एक और नमक वाला विज्ञापन देखें। जहाँ हसीना का सुंदरता और बालों का रख-रखाव देखकर आकर्षित होता है। उसमें वह खो जाता है। लेकिन जैसे ही चॉकलेट खाने पर दाँतों में दर्द से परेशान होता है। वही हसीना अपने खूबसूरत बालों का विग पेंक देती है और पूछती है कि क्या आपके दाँतों में दर्द है? नहीं? आपके लिए लाए हैं नमक वाला टूथपेस्ट। ये दोनों विज्ञापन विसंगत भी लगते हैं। यह सब बकवास है। जनता की जेब से पैसा निकालना एकमात्र उद्देश्य है।

बालों की सुंदरता, मज़बूती और चमक के लिए भी अनेक शैम्पू और साबुन हैं। विज्ञापनकर्ता फिल्मी नायिकाओं को लम्बे, घने बालों की विग लगाकर शैम्पू से धोते हुए दिखाता है। जबकि वास्तविकता कुछ और ही होती है। इससे लाभ तो कम, हानि बहुत होती है कि स्त्रियों के बाल झड़ जाते हैं। वैसे विसंगति तो यही है कि चाहें विपाशा बसु हों, या शिल्पा सेट्टी, मूलतः उनके बाल उतने लम्बे हैं ही नहीं, लेकिन विज्ञापनकर्ता लम्बे बताता है और शैम्पू को अपने घर में पहुँचा ही देता है। साबुन की बात करें, तो साबुन हमारे प्रत्येक अंग के लिए स्वतंत्र हैं। चेहरे का, बदन का, हाथ-पैर का, पता नहीं, कितने साबुन के विज्ञापन हैं। यदि हम एक-एक खरीदना चाहें, तो बिल कितना होगा? परंतु विज्ञापनकर्ता ऐश्वर्या बच्चन के खूबसूरत चेहरे का सहारा लेते हैं। वह यहीं पर रुकता नहीं, उसके पति अभिषेक बच्चन के हाथ में सोने का सिक्का थमाते हुए प्रलोभन भी देता है कि आप लक्स खरीदें और सोने जैसी बीवी के साथ सोने का सिक्का पाइये। ऐसे प्रलोभन और झूठेपन पर आम जनता बली हो जाती है। क्या यह समाज का शोषण नहीं है? हाँ है। दूरदर्शन के विज्ञापन का सबसे बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। टीवी के कारण बच्चों पर होने वाले बुरे असर को स्पष्ट करते हुए प्रो होल्जगर का कहना है कि अतिदर्शन से बच्चों की आँखों पर ज़ेर पड़ता है और उसकी नींद उचट सकती है। और दूरदर्शन से चिपके रहने के कारण उनमें लोक व्यवहार भी समाप्त हो जाता है। लेकिन इन बातों पर कौन ध्यान देगा? वहाँ विज्ञापनकर्ता एक से बढ़कर एक विज्ञापन बनाता है। उसे केवल पैसा पाना होता है। उस चीज़ से बच्चों को फायदा होगा या नहीं, उससे उसे कुछ लेना-देना नहीं। उदाहरण देखें- एक ओर चॉकलेट का विज्ञापन दिखाकर उकसाता है, वहीं दूसरे विज्ञापन में कहता है कि मीठा खाने से दाँतों पर बुरा असर होता है, तो आपके लाडले को चाहिए पेप्सोडेंट टूथपेस्ट। यदि दाँत ठीक न हुए, तो अस्पताल जाइए और दाँत निकाल दीजिए। सड़े हुए दाँत शरीर को हानि पहुँचाते हैं। अर्थात् फायदा कम, नुकसान ज्यादा वाली बात है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि दूरदर्शन के विज्ञापन मनुष्य जीवन को नुकसान ज्यादा पहुँचाते हैं। ऐसा नहीं है। कुछ ऐसे भी विज्ञापन हैं, जो देशहित, देश रक्षा समाज प्रबोधन, मानवीय जीवन-मूल्यों की रक्षा, एकता और अखंडता का संदेश देकर देशवासियों को जगाने का उत्तमोत्तम कार्य करते हैं। ओगिलवी माथेर नामक एक विदेशी एजेंसी ने मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा वाला विज्ञापन बनाया। यह राष्ट्रीय एकता का सुर अलाप रहा है, तो कैंसर से बचने के लिए सिगरेट की मनाही का विज्ञापन जन-जागृति कर रहा है। जैसे एक-एक सिगरेट को जलाकर कहा है किश्तों में मौत का विज्ञापन, बीडी पीने वाले एक-एक करके खासते हैं और दूसरी बार उनका फोटो दीवार पर टंग जाता है, जिससे लोग बीड़ी पीने से कतराते हैं। शराब पीकर ट्रक चलाने वाले ड्राइवर का विज्ञापन दुर्घटनाओं को बुलावा और मौत। ये सारे विज्ञापन समाज को जगाने का कम करते हैं। ऐसे अनेक विज्ञापन हैं, जो समाज को जगाने का काम करते हैं। ऐसे अनेक विज्ञापन हैं, जो समाज सुधार जनजागृति की दृष्टि से प्रसारित होते हैं। लेकिन बहुत कम। निष्कर्ष स्पष्ट है, दूरदर्शन संचार का सबसे ज्यादा प्रभावशाली माध्यम है। इस पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन उतने ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली हैं, जो समाज पर अपनी अमिट छाप डालते हैं। समाज को सुधारने के लिए ये टीवी विज्ञापन जितने महत्वपूर्ण हैं, उतने ही घातक भी हैं और अमानवीय जीवन-मूल्यों का ह्रास होने की दृष्टि से नुकसानदेह भी हैं। डॉ. लक्ष्मीकांत वार्ष्णेय के अनुसार विज्ञापन हमारी संवेदना, संस्कृति, सभ्यता आदर्श की बलि चढ़ा रहे हैं। ऐसी बाज़ारू बिकाई संस्कृति को जन्म दे रहा है कि इसमें मूल्य, नैतिकता आदि की कोई पूछ नहीं रह जाएगी। टीवी विज्ञापन के प्रसारण से विकास भलेही हुआ हो,(भलाई की दृष्टि से) लेकिन उससे जो हानि हो रही है, उसकी तरफ देखने की किसी को फुर्सत नहीं है। न सरकार को, न देशवासियों को। किन्तु इसके दुष्परिणाम भयंकर हो सकते हैं। पाश्चात्य देशों में जो वातावरण आया है, और जो नैतिकता उन्होंने खो दी है, उसे देखते हुए काश हम सुधर जाएं, अन्यथा दुष्यंत कुमार के एक सेर की भाँति हमारा अन्त न हो।

बाढ़ की संभावनाएं सामने हैं और नदियों के किनारे घर बने हैं। देखना है, इस घर क्या होता है।

- समाज प्रवाह से साभार

Date: 27-06-2013

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 27-06-2013 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707, ఓరియన్:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

उत्तराखंड की विषाद गाथा

प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में सरकार की संवेदनहीनता

आसमान से बरसने वाली आपदाएं और उसकी वजह से होने वाली भूस्खलन की घटनाएँ पहाड़ी राज्य उत्तराखंड में मौत का पर्याय बन गई हैं। पिछले पाँच साल में उत्तराखंड में सबसे ज्यादा मौतें भूस्खलन, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, तूफान व बादल फटने से हुई हैं। मगर इन घटनाओं की त्रासदी कम करनेके लिए सूबे का आपदा प्रबंधन महकमा अब तक कोई ठोस प्लान तैयार नहीं कर सका। अर्ली वार्निंग सिस्टम विकसति करने की योजनाएँ ठंडे बस्ते में पड़ी हैं। चार दिन पूर्व जल प्रलय व भूस्खलन से रुद्र प्रयाग की केदार घाटी व चमोली के कई हिस्सों में हुई विनाश लीला ने समूचे देश को भीतर तक हिलाकर रख दिया है। पिछले साल भी उत्तर काशी व ऊखी मठ में तबाही का कुछ ऐसा ही खौफनाक मंजर देखा जा चुका है। मगर लगता है तबाही की इन सिलसिलेवार घटनाओं से भी सरकार का दिल नहीं पसीजा। राज्य के आपदा प्रबंधन विभाग के अध्ययन में भी साफ हो चुका है कि उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा से हुई २८ फीसदी मौतों की वजह अतिवृष्टि की घटनाएं बनी हैं। पिछले पाँच साल में २७ फीसद जिंदगियाँ सिर्फ भूस्खलन की चपेट में आने से तवाह हुई। ओलावृष्टि, तूफान, महामारी, भूकंप व बादल फटने की घटनाएं भी मौतों की मुख्य वजहें हैं। मगर इस खौफनाक हकीकत से भी सरकार ने कोई सवक नहीं लिया। सीएजी की रिपोर्ट में भी राज्य के आपदा प्रबंधन तंत्र की लापरवाही पर सख्त टिप्पणी की गई है। सीएजी ने भी माना कि राज्य में अर्ली वार्निंग सिस्टम के लिए कोई प्लान तैयार नहीं हुआ है। संचार तंत्र दुरुस्त न होने से भी संवेदनशील क्षेत्रों में समय पर अलर्ट जारी नहीं हो पाता। केदारनाथ घाटी में हुई तबाही के दो दिन बाद तक सरकार को वास्तविक स्थिति का पता न लगना भी इसी की नतीजा है। नतीजा यह कि घाटी में जगह-जगह फँसे आपदा प्रभावितों तक समय पर मदद या राहत नहीं पहुँच पाई। ऐसे में मसूरी व नैनीताल में डॉपलर रडार लगाने की योजना वर्षों बाद भी धरातल पर न उतरना सरकार की संवेदनहीनता को ही उजागर करती है।

उत्तराखंड में आपदा की चपेट में आकर मारे गए लोगों के अभी तक ५५६ शव मिले हैं। मृतकों की संख्या बहुत ज्यादा भी हो सकती है। उत्तरा खंड के पास आपदा प्रवंधन की कोई योजना नहीं थी और गठन के बाद एसडीएमए की कोई बैठक नहीं हुई थी। सबसे ज्यादा प्राकृतिक आपदा झेलने वाले राज्य उत्तराखंड के पास आपदा की स्थिती से निपटने के लिए कोई योजना ही नहीं थी। यही नहीं, २००७ से राजकीय आपदा प्रवंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) की कोई बैठक ही नहीं हुई। ये खुलासा सीएजी ने अपनी इसी साल अप्रैल में जारी की गई रिपोर्ट में किया है। सीएजी की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि उत्तराखंड ने आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के इसी रवैये को देखते हुए २०११-१२ में उसे कोई फंड भी जारी नहीं किया है। १७ जून को हुई तबाही में सबसे ज्यादा जान-माल का नुकसान केदारनाथ में हुआ है। कुदरत की उस तबाही में गौरीकुंड भी पूरी तरह तबाह हो गया है। हर तरफ मौत का सन्नाटा पसरा हुआ है। उत्तराखंड की आपदा में फंसे लोगों के परिजनों को अपनों की चिंता सता रही है। आपदा में फंसे लोगों से उनके परिजनों का संपर्क नहीं हो पा रहा है।

आपदा मौत का प्रतिशत : २८ फीसद अतिवृष्टि से, २७ प्रतिशत भूस्खलन से, २१ प्रतिशत ओलावृष्टि व तूफान से १८ फीसद भूकंप, बादल फटना आदि से ४ प्रतिशत अग्निकांड से २ प्रतिशत हिमस्खलन से.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

संपादक: श्री विठ्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से

कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया। प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.सु.बाज़ार,हैदराबाद